शैतान की आरज़ू और तमन्ना यही है कि वो हमें तबाह व बर्बाद कर दे, सहाबा-ए-किराम और बुज़ुर्गाने दीन के नज़रियात से दूर कर दे। शैतान यही चाहता है कि मुसलमान कुरआन मजीद की आयात का ग़लत मफ्हूम समझकर अपने दुरुस्त अक़ीदे से दूर हो जाऐं। इसी तरह इस बदबख़्त (शैतान) की ख्वाहिश है कि मुसलमान दुनिया की रंगीनियों में बदमस्त हो जाऐं, क़ब्रो-आख़िरत को भूल जाऐं। याद रखें ! दुनिया की मुहब्बत दुनिया की ग़र्ज़ के लिए है। हमारे चाहने वाले अपने कांधों पर लाद कर अंधेरी कब्र में तन्हा छोड़कर चले जाऐंगे और हमारा कोई पूछने वाला न होगा। खुदारा ! अपने ईमान की हिफाज़त की फिक्र रखें, अपने अंदर खौफे खुदा पैदा करें, इश्क़े मुस्तफा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को दिल में उजागर कीजिए। यक़ीनन इन तमाम चीज़ों के लिए एक माहौल की ज़रूरत है। वह माहौल मिलेगा और बनेगा कुरआन से राब्ता बनाने पर , बुज़ुर्गाने दीन की मुहब्बत फैलाने वालों से राब्ता बनाने पर।

मेरी दुआ है अल्लाह तआला हमें इसके इब्लाग़ व तबलीग़ की तौफीक़ अता फरमाए और अल्लाह हम सब आशिक़ाने मुस्तफा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का हामी और मददगार हो।

व आ-ख़रु दाअवाना अनिल्हम्दुलिल्लाहि रब्बिल आलमीन

अस्सलामु अलैकुम व रहमतुल्लाहि व बरकातुहू

शिर्क़ की हक़ीक़त

मुक़र्रिर :- हज़रत मुफ्ती आसिफ अब्दुल्लाह क़ादरी साहब

मस्लके हक़ अहले-सुन्नत व जमाअत की हक़्क़ानियत व सदाक़त पर कुरआन व हदीस की रोशनी में बेहतरीन इल्मी व तेहक़ीक़ी बयान

तौहीदो-रिसालत का नारा दुनिया में लगाने निकले हैं ,
फारान की चोटी का नग़मा घर-घर में सुनाने निकले हैं।

कुरआन की दौलत सीनों में, सुन्नत का फरैरा हाथों में ,
गुल्हाए सदाक़त की खुशबू दिल-दिल में बसाने निकले हैं।

ये इल्म तो मेरे आक़ा की बारिश की बरसती बूँदें हैं ,
तस्नीमे नबुव्वत के क़ासे बस पीने-पिलाने निकले हैं।

सज्दा तो सिर्फ अल्लाह को करें, ताज़ीम है अल्लाह वालों की ,
गुल्दाने अक़ीदा में हम तो ये फूल सजाने निकले हैं।

जिन्हें आता करना फर्क़ नही अल्लाह के अपने-गैरों में,
ऐसी फासिको-फाजिर सोचों को सूली पे चढ़ाने निकले हैं।

जब कूच का मौसम आ जाए, हर दिल ये गवाही देता हो ,
लो काम तो काफी कर बैठे, अब जन्नत जाने निकले हैं।

अपना तो ये जज़्बा है आसिफ, हर सांस में सई पैहम हो,
न थकने-थकाने निकले हैं, न सोन-सुलाने निकले हैं।

मदनी इल्तिजा :- इस रिसाले में अगर किसी जगह ग़लती पाऐं तो ब-ज़रीअए ईमेल मुत्तलअ फरमा कर सवाबे आख़िरत कमाइये।

email:- labbaikyarasoolallah_indore@rediffmail.com

शिर्क की हक़ीक़त

तक़रीर :- हज़रत मुफ़्ती आसिफ अब्दुल्लाह क़ादरी साहब

नह-म-द-हू वनूसल्लि , वनुसल्लि अला रसूलेहिल करीम
अम्मा बाअद फआऊजोबिल्लाहि मिनश्शैतानिर्रजीम बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम
"इह्दिनस्सिरातल मुस्तक़ीम"
सदकल्लाहुल अज़ीम व सदक़ा रसूलोहुन्नबिय्युल करीम

तमाम तारीफ़ें अल्लाह तआला के लिये हैं जिसने अपने मेहबूबे करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को वो अज़ीमुश्शान कलाम अता फरमाया जो हमेशा लोगों की रेहनुमाई फरमाता रहेगा | कुरआन करीम फुरक़ाने हमीद हबीबे किब्रिया सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का वो अज़ीमुश्शान मोजिज़ा है जो इल्मो इरफान का आफताबे जहांताब है | इसी कलाम की तासीर ने हज़रते सय्यदुना उमर रदियल्लाहु तआला अन्हु के क़ल्बे अनवर पर वो असर किया कि उन्होने हमेशा के लिये हुज़ूर की ग़ुलामी इख़्तियार कर ली | यही वो बुलंद रुत्बा आली कलाम है जिसने हज़रते ज़ुबैर बिन मुतअम रदियल्लाहु अन्हु को दो जहाँ के सरदार सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के क़दमों से हमेशा के लिये वाबस्ता करा दिया | रहमान और रहीम परवरदिगार अज्जवजल ने अपने बंदों की रेहनुमाई और उनकी हक़ीक़ी फलाहो कामरानी के लिये मेहबूबे करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के क़ल्बे अनवर पर वो बुलंद रुत्बा कलाम नाज़िल फरमाया जिसमें ज़िंदगी की हरारत और हिदायत का नूर दोनों यकजां हैं | फारान की वादियों से कुरआन का चश्मा ए फैज़ क्या फूटा कि इस से उलूम व फुनून के दरिया बह निकले और न जाने कैसे कैसे बे नामो-निशान कुरआन करीम के फ़ैज़ से लोगों के इमाम व पैशवा बन कर उभरे | जब लबों पर इन मुकद्दस हस्तियों का नाम ए मुबारक आता है तो बिला इख़्तियार " रदियल्लाहु अन्हुम और रहमतुल्लाहि अलैहि ज़ुबान से निकल जाता है | अल गर्ज़ जिन लोगों के दिलों में कुरआन करीम की तासीर का तीर फज़्ले ईलाही और निग़ाहे मुस्तफा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बरक़त से पैवस्त हो गया, यक़ीनन वो कामयाब हो गए | रिफअतों और बुलंदियों को पा गये | दुनिया में आने का मक़सद पूरा कर गये और मंज़िले मक़सूद तक पहुँच गए | कुरआन करीम वो प्यारी किताब है जिसमें शक की गुंजाईश नही | ذٰلِكَ الْكِتٰبُ لَا رَيْبَ فِيْهِ कुरआन वाज़ेह दलील है और नूर है | कुरआन शिफा है | कुरआन सारे जहाँ वालों के लिये नसीहत है | कुरआन पिछली किताबों की तस्दीक़ करता है | कुरआन मुफस्सल किताब है | कुरआन मुबारक है | कुरआन करीम है | कुरआन पाक में हर ख़ुश्को तर का बयान है | कुरआन पाक ने हर वक़्त ग़ौरो फिक्र की दावत पैश की | अल्लाह तआला की तरफ रुजुअ लाने की तर्ग़ीब दिलाई | लेकिन हर पढ़ने वाला और कुरआन पाक में सतही नज़र करने वाला ये न समझे कलामे ईलाही की तिलावत करने वाले तमाम ही अफराद

ऐसे लोग यक़ीनन दीन से भी दूर हैं और ऐसे लोगों का कुर्ब इंसान को कुरआन से दूर कर देता है। आप सोचें जिस आक़ा-ए- दो जहां सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को हम मानते हैं, वो हदीसे पाक (उनकी) जो आपने अपने विसाले ज़ाहिरी से तीन दिन पहले इर्शाद फरमाई। बुख़ारी शरीफ जिल्द-2 सफ्ह नम्बर 975, किताबुर्रिकाक, हदीस नम्बर -6102 । आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम इर्शाद फरमाते हैं :- **खुदा की कसम मुझे इस बात का कोई ख़ौफ नही कि तुम मेरे बाद शिर्क करोगे।"** यानि हुज़ूर फरमाते हैं कि मुझे इस बात का कोई ख़ौफ नही कि मेरी उम्मत शिर्क में मुब्तिला हो जाएगी। हाँ ये फरमाते हैं कि **"हाँ मुझे इस बात का डर ज़रूर है कि तुम दुनिया में फंस जाओगे, दुनिया की मुहब्बत में गिरफ्तार हो जाओगे।"**

आज बताइए कौन है जो दुनिया की मुहब्बत में डूबा हुआ नही हो (मगर जिसे अल्लाह बचाए)। लेकिन हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमा दिया कि मेरी उम्मत शिर्क नही करेगी। हुज़ूर के मानने वाले, हुज़ूर से मुहब्बत करने वाले, हुज़ूर का कलिमा पढ़ने वाले कितने भी दीन से दूर हों ,मगर जब उन से पूछा जाए कि बताओ हक़ीक़ी तौ पर मालिक कौन है **?** हक़ीक़ी तौर पर तेअमतें देने वाला कौन है **?** हक़ीक़ी तौर पर ख़ालिक व मालिक कौन है **?** तो वो यही कहेंगे कि **"अल्लाह है"** और अल्लाह तआला के नेक बंदे अंबिया और सालेहीन जो ताक़तें रखते हैं , जो मोजिज़ात और करामात का इज़्हार होता है, जो उनकी कुदरत का इज़्हार होता है वो कैसे है **?** तो हर मुसलमान यही कहेगा कि **बि-इज़्निल्लाह है, अल्लाह की दी हुई ताक़तों से है।** कोई किसी को अल्लाह के सिवा न रब मानता है, न खुदा मानता है, न इलाह मानता है, न माअबूद मानता है।

सवाल ये पैदा होता है कि क्या नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अल्लाह के बंदों से मदद माँगने की इज़ाज़त दी **?** उसका जवाब ये है कि जी हाँ। सहीह अहादीस में मौजूद है। **हज़रते उत्बा बिन ग़ज़वान से मरवी है कि नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इर्शाद फरमाया, " जब तुम में से किसी की कोई चीज़ गुम हो जाए या वो मदद हासिल करना चाहे और वो ऐसी ज़मीन में हो जहाँ उसका कोई मददगार न हो तो उसे चाहिए कि वो कहे - [ऐ अल्लाह के बंदों मेरी मदद करो] । बेशक अल्लाह के ऐसे मक़बूल बंदे हैं जो नज़र नही आते और मदद करते हैं। "**

मोहद्दिसीन फरमाते हैं कि ये एक ऐसा अमल है कि इसपर अमल किया गया और इसके फयदे फौरन ज़ाहिर हुए। इस हदीसे पाक से बिल्कुल वाज़ेह हुआ कि अल्लाह के बंदों से मदद माँगने की नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने तरग़ीब दी है।

इन तमाम अहादीस, कुरआन की आयतों के बाद आख़िर में आजिज़ाना दर्ख़्वास्त ये है मोहरतम भाईयों ! कुरआन पाक में इर्शाद है सूरह फातिर आयत नंबर-6

اِنَّ الشَّيْطٰنَ لَكُمْ عَدُوٌّ فَاتَّخِذُوْهُ عَدُوًّا ؕ اِنَّمَا يَدْعُوْا حِزْبَهٗ لِيَكُوْنُوْا مِنْ اَصْحٰبِ السَّعِيْرِ

तर्जुमा :- **"बेशक शैतान तुम्हारा दुश्मन है तो तुम भी उसे दुश्मन समझो।"**

नही करता। कितना बड़ा फ़र्क़ है।

दूसरी बात ये एक तो वो शिर्क कर रहे हैं, बुतों को पूज रहे हैं, अल्लाह की नाफरमानी कर रहे हैं और समझ रहे हैं कि हम अल्लाह के नज़्दीक़ हो जाऐंगे। जो अल्लाह की नाफरमानी करे वो अल्लाह के नज़्दीक़ तो नही हो सकता। और ये बुत, जिनका कोई मुक़ाम नही, जिनसे दूर रहने का हमें हुक़्म दिया गया, ये पत्थर के बेजान बुत, अल्लाह के क़रीब करने की सलाहियत और ताक़त रखते ही नही हैं। अल्लाह ने इन बुतों को कोई मुक़ाम व मर्तबा नही दिया।

इतना फर्क़ है इसके बावजूद इस आयत को मुसलमानों पर चस्पा करना, ये कितना बड़ा ज़ुल्म है और कितनी बड़ी ग़लती है। मोमिनिन और मुश्रिकीन, बुतों और सालेहीन में कोई बराबरी नही है। कुरआन मजीद का मुताअला कीजिए। बुतों से दूर रहने का हुक़्म दिया गया है और अंबिया और सालेहीन से वाब्स्ता रहने का हुक़्म दिया गया है। बुतों को तोड़ने का हुक़्म दिया गया है और लेकिन अंबिया और सालेहीन से हमेशा जुड़े रहने का हुक़्म दिया गया है। बुतों की मुहब्बत अल्लाह तआला से दूर कर देती है, अंबिया और औलिया/सालेहीन की मुहब्बत अल्लाह के क़रीब कर देती है। बुत ना ग़म-ख़्वार हैं ना मददगार हैं, अंबिया और सालेहीन अल्लाह की दी हुई ताक़तों से बि-इज़्निल्लाह मददगार और ग़म-ख़्वार हैं।

जब इतना बड़ा फर्क़ है तो बुत और सालेहीन बराबर नही हो सकते। कुर्बान जाइए कुरआन मजीद पर। इस ने तो पहले ही फरमा दिया :- **"युदिल्लु बिही कसीरा" यानि "कई कुरआन पढ़ने के बावजूद गुमराह हो जाते हैं"** कुरआन को ग़लत समझने की वजह से।

➢हज़रते उमर बिन ख़त्ताब फरमाते हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इर्शाद फरमाया ,**"अल्लाह तआला इस कुरआन के ज़रीए बाज़ लोगों को बुलंदी अता फरमाएगा और इस कुरआन के ज़रीए बाज़ लोगों को तबाह व बर्बाद फरमाएगा"**

बुलंदी उन्हें ही मिलेगी जो नूरे कुरआन से मुनव्वर होंगे और नूरे कुरआन से मुनव्वर होने के लिए साहिबे कुरआन यानि आक़ा-ए-दो जहां सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मुहब्बत ज़रूरी है। और तबाह व बर्बाद और ज़लील और रुस्वा वो लोग होंगे जो कुरआन को ग़लत तरीक़े से समझकर मुसलमानों पर शिर्क के इल्ज़ाम लगाकर खुद ही दायरा-ए-इस्लाम से दूर होते हैं। जो लोग बुतों वाली आयतें मुसलमानों पर फिट करते हैं।

नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जिस खारजी गिरोह को **'शिरारुल ख़ल्क़"** फरमाया कि ये मख़्लूक़ में बदतरीन लोग होंगे। इब्ने माजा में ये अल्फाज़ मौजूद हैं। इस गिरोह के मुताल्लिक हज़रते अब्दुल्लाह बिन उमर रदियल्लाहु अन्हुमा का कौल इमाम बुख़ारी अलैहिर्रहमा ने जिल्द-2 सफ्ह नम्बर 1024 पर आपने ज़िक्र किया। ये ख़ारजियों की अलामत बयान करते हैं ,**"ये ख़ारजी इतने गुमराह लोग हैं कि जो आयतें काफिरों के बारे में नाज़िल हुई हैं उन्हें मुसलमानों पर चस्पा करते है। जो आयतें बुतों के लिए आईं, वो मुसलमानों और औलिया पर फिट करते हैं।"**

मक़सद को पा लेंगे | नही ! ऐसा नही | खुद कुरआन मजीद ने इसकी तर्दीद की |
चुनाँचे सूरह बक़रह की आयत नंबर 26 में इर्शाद हुआ :-

اِنَّ اللهَ لَا يَسْتَحْىٖٓ اَنْ يَّضْرِبَ مَثَلًا مَّا بَعُوْضَةً فَمَا فَوْقَهَا ؕ فَاَمَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا فَيَعْلَمُوْنَ اَنَّهُ الْحَقُّ مِنْ رَّبِّهِمْ ۚ وَاَمَّا الَّذِيْنَ كَفَرُوْا فَيَقُوْلُوْنَ مَاذَآ اَرَادَ اللهُ بِهٰذَا مَثَلًا ۘ **يُضِلُّ بِهٖ كَثِيْرًا ۙ وَّيَهْدِىْ بِهٖ كَثِيْرًا** ؕ وَمَا يُضِلُّ بِهٖٓ اِلَّا الْفٰسِقِيْنَ

बोल्ड जुज़ का तर्जुमा:- "बहुत से लोग इस कुरआन से गुमराह होते हैं और बहुत से लोग इस से हिदायत पाते हैं |"

सवाल ये है कि बहुत से लोग कुरआन पढ़ कर गुमराह क्यों होते हैं ? इसकी वजह मुफस्सिरीन ने ये बयान की कि वो कुरआन मजीद फ़ुरक़ाने हमीद को पढ़ते तो हैं लेकिन उनका दिल नूरे कुरआन से मुनव्वर नही होता | वो कुरआन की आयतों का ग़लत मतलब और ग़लत मफहूम समझ लेते हैं | ग़लत तर्जुमा और ग़लत मफहूम समझने की वजह से गुमराह हो जाते हैं | चुनाँचे ऐसा ही एक गिरोह गुज़रा जिसने कुरआन करीम की एक आयत पर नज़र करते हुए दूसरी आयतों का इंकार कर दिया | इस गिरोह के तफ्सीली हालात बुख़ारी, मुस्लिम, इब्ने माजा और दिगर हदीस की किताबों में मौजूद है | अल्लामा ईमाम अब्दुर्रहमान बिन जोज़ी अल बग़दादी अलैहिर्रहमा जिन का सने विसाल 597 हिजरी है, आज से 800 साल क़ब्ल आपने अपनी मशहूर और मारूफ किताब तल्बीसे इब्लीस लिखी | यह किताब अरबी में है | इस किताब में आप ख़ारजियों के हालात बयान करते हैं | ख़ारजी वे लोग थे जो हज़रते अली रदियल्लाहु अन्हु के ज़माने में पैदा हुए | ये ख़ारजी लोग कलिमा-ए-इस्लाम भी पढ़ते थे, नमाज़ें भी पढ़ते थे, कुरआन की तिलावत भी करते थे | बल्कि इस कदर शिद्दत के साथ कसरत से अल्लाह की इबादत करते थे कि हज़रते अब्दुल्लाह बिन अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा ने इस गिरोह को देखा तो आप फरमाते हैं ," मेने इन ख़ारजियों से बढ़कर इबादत में कोशिश करने वाली क़ौम ना देखी" | सज्दों की कसरत की वजह से इन की पैशानियों पर ज़ख्म पड़ गए थे " | लेकिन कुरआन मजीद फ़ुरक़ाने हमीद ग़लत समझने की वजह से ये ख़ारजी ऐसे गुमराह हुए कि इन्होने हज़रते अली रदियल्लाहु अन्हु और तमाम सहाबा ए किराम पर शिर्क का इल्ज़ाम लगा दिया और वो (खारजी) कहने लगे कि हज़रते अली रदियल्लाहु अन्हु इस्लाम से ख़ारिज हैं | (नाऊज़ु बिल्लाहि मिन ज़ालिक़) | वो खारजी जिस आयत को बुनियाद बना रहे थे , वो कुरआन मजीद फ़ुरक़ाने हमीद की सूरह यूसुफ की आयत नं. 67 है .

وَقَالَ يٰبَنِىَّ لَا تَدْخُلُوْا مِنْۢ بَابٍ وَّاحِدٍ وَّادْخُلُوْا مِنْ اَبْوَابٍ مُّتَفَرِّقَةٍ ؕ وَمَاۤ اُغْنِىْ عَنْكُمْ مِّنَ اللهِ مِنْ شَىْءٍ ؕ **اِنِ الْحُكْمُ اِلَّا لِلّٰهِ** ؕ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ ۚ وَ عَلَيْهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُتَوَكِّلُوْنَ (٦٧)

हज़रते अली रदियल्लाहु अन्हु ने एक झगड़े को खत्म करने के लिए फैसला करने के लिये किसी को मुक़र्रर किया | ये खारजी कहने लगे कि फैसला करने वाला तो सिर्फ अल्लाह है | हालांकि इस आयत का यह मतलब नही है | इस आयत का यह मतलब है कि हक़ीक़ी तौर पर फैसला करने वाला अल्लाह तआला है | हक़ीक़ी हक़म वही है | और जो शख़्स फैसला करे

इंसानों में से उसे चाहिए कि कुरआन हदीस के मुताबिक फैसला करे | हक़ीक़ी फैसला करने का इख़्तियार अल्लाह तआला को है | लेकिन वो ख़ारजी ना समझ सके । तो हज़रते अली रदियल्लाहु अन्हु ने हज़रते अब्बास रदियल्लाहु अन्हु को हुक्म दिया । हज़रते अब्बास गए और उनसे (ख़ारजियों से) पूछा की क्या बात है तुम सहाबा पर शिर्क का इल्ज़ाम क्यों लगाते हो ?, इन्हें मुश्रिक क्यों कहते हो ? तो वो ख़ारजी जो बहुत कसरत से अल्लाह की इबादत करने वाले थे, बज़ाहिर कलिमा पढ़ने वाले भी थे लेकिन कुरआन गलत समझने की वजह से गुमराह हुए । वो (ख़ारजी) कहने लगे, "अल्लाह तआला फरमाता है कि फैसला करने वाला सिर्फ वही है , तो फिर हज़रते अली ने कैसे फैसला करने वाला मुकर्रर किया ? हज़रते अब्दुल्लाह बिन अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा ने फरमाया, ' ज़रा ये बताओ अगर मै तुम्हें कुरआन से साबित कर दूँ कि इंसानों में से फैसला करने वाला मुकर्रर किया जा सकता है तो क्या तुम अपनी बात से रुजूअ कर लोगे ? तो वो (ख़ारजी) कहने लगे, हाँ हम रुजूअ कर लेंगे, बताइए कुरआन की आयत,तो आपने सूरतुन्निसा की आयत नम्बर 35 की तिलावत फरमाई ।

وَ اِنْ خِفْتُمْ شِقَاقَ بَيْنِهِمَا فَابْعَثُوْا حَكَمًا مِّنْ اَهْلِهٖ وَحَكَمًا مِّنْ اَهْلِهَا ۚ اِنْ يُّرِيْدَآ اِصْلَاحًا يُّوَفِّقِ اللّٰهُ بَيْنَهُمَا ؕ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَلِيْمًا خَبِيْرًا

(कुरआन सूरतुन्निसा आयत न. 35)

तर्जुमा :- " जब मियां-बीवी के दर्मियान झगड़ा हो जाए और तुम इनके बीच सुलह करना चाहो तो एक हक़म (फैसला करने वाला) शौहर की तरफ से मुकर्रर हो और दूसरा हक़म (फैसला करने वाला) बीवी की तरफ से मुकर्रर किया जाए ।"

हज़रते अब्दुल्लाह बिन अब्बास ने फरमाया , ऐ ख़ारजियों ! ज़रा सोचो,रब्बुल आलमीन दो हक़म (दो फैसला करने वाले) मुकर्रर फरमा रहा है । तो अगर अल्लाह के सिवा किसी और को फैसला करने वाला मुकर्रर करना शिर्क होता तो कभी कुरआन शिर्क की दावत ना देता । और वहाँ मुराद है कि हक़ीक़ी फैसला करने वाला सिर्फ अल्लाह है ।

कितना प्यारा अंदाज़ था । मगर अफसोस, ख़ारजियों की बड़ी तादाद अपनी जिद पर कायम रही, सिर्फ चंद ख़ारजी ऐसे थे जिन्होने तौबा की । तौफीक देने वाला सिर्फ और सिर्फ अल्लाह है ।

मोहतरम और प्यारे भाईयों ! इन तमाम बातों से मालूम ये हुआ कि अगर कुरआन पाक को ग़लत तरीक़े से समझ लिया जाए तो बसा-अवकात (बहुत सी बार) कितनी ग़लत राह पर वो चला जाता है कि वो कौम इबादत भी कर रही ,मगर हज़रते अली और सहाब ए किराम को मुश्रिक समझकर खुद दायरा ए इस्लाम से ख़ारिज हो रही है । उनकी इबादतें ज़ाया हो रहीं हैं । ऐसी कुरआन मजीद फुरक़ाने हमीद में कई मिसालें हैं कि बज़ाहिर एक आयत का ग़लत मतलब

को हल फरमाने वाले हैं । ऐ अल्लाह दुरूद भेज उस ज़ात पर जो ग़म को दूर करने वाले हैं ।
इससे सहाबा-ए-किराम, बुज़ुर्गाने दीन और औलिया-ए-किराम के अक़ीदे की वज़ाहत हो गई । सहाबा का ज़िक्र भी हुआ, हज़रते इमामे आज़म का भी ज़िक्र हुआ और हज़रते मुहम्मद बिन जज़ौली अलैहिर्रहमा का भी ज़िक्रे ख़ैर किया गया । ऐसे कई बुज़ुर्गाने दीन हैं जिनका ये मामूल रहा और उन्होने कुरआन मजीद फुरक़ाने हमीद समझने के साथ-साथ मुसलमानों को ये सोच अता फरमाई कि हक़ीक़ी देने वाला तो अल्लाह ही है लेकिन अल्लाह वालों से लौ लगाना, उनकी बारग़ाह में हाज़िर होना, ये बाईसे सआदत है । लेकिन ये बात याद रखें कि जब हम अल्लाह वाले के पास हाज़िर हों या अल्लाह वाले को यहाँ से अर्ज़ करें कि **"आप हमारा ये काम कर दें, आप हमारी मदद फरमाएं"** तो इसके माअना यही होते हैं कि अल्लाह की मदद हासिल होने का ये ज़रीआ हैं, वसीला हैं । हक़ीक़त में तो अल्लाह ही मदद फरमाएगा , अल्लाह ने इन्हें वसीला और ज़रीआ बनाया है । दुनिया के अंदर हम दुनियादारों को कई मौक़ों पर मदद हासिल करने का ज़रीआ समझते हैं । रोज़ी देने वाला अल्लाह ही है । अता करने वाला अल्लाह ही है । लेकिन कोई अगर हमारी मदद कर देता है तो हम कहते हैं कि फलां ने हमारी मदद की ।अक़ीदा यही है कि हक़ीक़ी मददगार अल्लाह ही है, अल्लाह तआला ने अपनी मखलूक़ को ज़रीआ और वसीला बनाया । जब आम मख़लूक़ ज़रीआ और वसीला बन सकती है तो फरिश्तों,नबियों और वलियों की तो वो शान है जिसको हम अल्फाज़ में बयान नही कर सकते ।

जब शैतान ये देखता है कि मेरी कोशिश बेकार चली गई । मुसलमान अल्लाह तआला की कुदरत और ताक़त को मेहदूद मानने को तैय्यार नही । मुसलमान ये मानता है कि अल्लाह जिसको चाहे मुक़ाम व मर्तबा दे । इस मौक़े पर शैतान की ग़ुस्ताख़ी खुलकर सामने आ जाती है और अज़ली दुश्मन झूठ का सहारा लेते हुए कहता है - ' ऐ मुसलमानों ! तुम अल्लाह वालों से मुहब्बत करते हो । मदद के लिए उन्हें पुकारते हो ताकि अल्लाह तआला का कुर्ब तुम्हें मिल जाए और अल्लाह तआला से क़रीब हो जाओ । ये अक़ीदा तो मुश्रिकीन का था । वो भी बुतों को पूजते थे ताकि ये बुत उन्हें अल्लाह के क़रीब कर दें । तुम में और मुश्रिकों में क्या फर्क़ है ? और कुरआन मजीद की इस आयत को पेश किया जाता है । पारा 23 सूरह ज़ूमर की आयत नंबर 3 में इर्शाद है -

اَلَا لِلّٰهِ الدِّيْنُ الْخَالِصُ ؕ وَالَّذِيْنَ اتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِهٖٓ اَوْلِيَآءَ ۘ **مَا نَعْبُدُهُمْ اِلَّا لِيُقَرِّبُوْنَآ اِلَى اللّٰهِ زُلْفٰى** ؕ اِنَّ اللّٰهَ يَحْكُمُ بَيْنَهُمْ فِىْ مَا هُمْ فِيْهِ يَخْتَلِفُوْنَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِىْ مَنْ هُوَ كٰذِبٌ كَفَّارٌ

"मा नाअबुदुहुम इल्ला लि युकर्रबूना इल्लल्लाहि ज़ुल्फा"

तर्जुमा :- वो कहते हैं, " हम तो इन बुतों को सिर्फ इसलिए पूजते हैं कि ये हमें अल्लाह के नज़्दीक कर दें ।"

देखें ! कितना बड़ा झूठ है । मुश्रिकीन पूजा कर रहे हैं । कोई मुसलमान अल्लाह के सिवा और किसी की पूजा या इबादत नही करता । बात उन मुश्रिकों की हो रही है जो ग़ैरुल्लाह को पूजते हैं । वली हों, अंबिया हों, मुसलमान किसी को पूजता नही , किसी की इबादत

कौन सा होगा ? आपने फरमाया , वो जो मेरे और मेरे सहाबा के नक़्शे कदम पर होंगे ।"
तो सहाबा-ए-किराम तो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ताक़त , हुज़ूर के कमालात, हुज़ूर के इख़्तियारात और अल्लाह तआला ने जो आपको मुक़ाम व मर्तबा दिया है, सहाबा तस्लीम करते थे । तो जो सहाबा-ए-किराम के नक़्शे कदम पर चलना चाहता हो उसे चाहिए कि वो भी हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के मुक़ाम व मर्तबे को माने ।

सहाबा-ए-किराम के बाद सहाबा-ए-किराम से फ़ैज़ पाने वाले हमारे पेशवा सरदार सय्यदुना इमामुल आज़म इमाम अबू हनीफा रदियल्लाहु तआला अन्हु हैं । आप वो अल्लाह के नेक बंदे हैं कि सहाबा-ए-किराम से फैज़ हासिल किया । आप ताबई हैं । आप हुज़ूर की बारगाह मे अर्ज़ करते हैं-

या मालिक़ी कुन शाफई फी फा-क़ती
इन्नी फक़ीरुन फिर्रा लि-ग़िनाक़ा

तर्जुमा :- ऐ मेरे मालिक आक़ा-ए-दो जहां सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम आप मेरी हाजतों को पूरा कर दें । मै तमाम मख़्लूक़ में आपकी अता को हासिल करने वाला फक़ीरो-मोहताज हूँ ।

या अकरमस्सकलैन या कंज़लवरा जुद-ली बि-जूदिक़ा वर्दिनी बि-रिदाक़ा

तर्जुमा :- ऐ जिन्न और इंसानों में सबसे ज्यादा करीम, इज़्ज़त वाले । ऐ मख़लूक़ में ख़ज़ाने तक़्सीम करने वाले । मुझ पर एहसान फरमाइए (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) और अपनी रिज़ा से मुझे राज़ी फरमा दीजिए । अपनी अता से मुझे मालामाल फरमा दीजिए । मै आपकी अताओं का उम्मीदवार हूँ , आपसे सवाली हूँ । आप के सिवा मख़्लूक़ में अबू हनीफा का कोई भी नही है ।

बताइए ! इमाम-ए-आज़म अबू हनीफा से बढ़कर कुरआन समझने वाला हम में से कोई हो सकता है ? आप ताबई हैं । अल्लाह के नेक बंदे हैं । हुज़ूर की बारग़ाह में फरियाद कर रहे हैं । हुज़ूर के विसाले ज़ाहिरी के कई सालों के बाद हुज़ूर की बारग़ाह में तमन्नाएं करते हैं, उनसे मदद का सवाल कर रहे हैं । अक़ीदा वही है कि जो देगा अल्लाह ही देगा । हुज़ूर अल्लाह की अता से और अलाह तआला के करम से और बि-इज़्निल्लाह अता फरमाऐंगे ।

सालेहीन से फैज़ हासिल करने वाले साहिबे दलाइलुल ख़ैरात हैं जो बड़ी अज़मतों वाले हैं । बड़ा आपका मुक़ाम है । आपने दलाइलुल ख़ैरात शरीफ लिखी । सदियों पहले ये किताब लिखी गई दुरूदे पाक की । आप इसमें बड़ी अक़ीदतो-मुहब्बत के साथ दुरूदो-सलाम लिखते हैं । आपका इस्मे ग़िरामी हज़रते मुहम्मद बिन सुलैमान जज़ौली अलैहिर्रहमा है । आपका सने विसाल 16 रब्बिउल अव्वल 870 हिजरी है । दलाइलुल ख़ैरात शरीफ बड़ी मशहूरो-मारूफ किताब है और उलमा ने इसे मुजर्रब अमल करार दिया । आप जो दुरूदे पाक लिखते हैं ,दलाइलुल ख़ैरात शरीफ में उसकी चंद मिसालें देखें और देखें , समझें कि बुज़ुर्गाने दीन ने हुज़ूरे अक़्दस सल्ललाहु अलैहि वसल्लम के मुक़ामव मर्तबे को कैसा समझा ? आप लिखिते हैं ।

दुरुद शरीफ का तर्जुमा **:- ऐ अल्लाह उस ज़ाते मुक़द्दस पर रहमत नाज़िल फरमा जो सख़ावत करने वाले हैं, करम करने वाले हैं, हमारे आक़ा सल्लल्लाहुअलैहि वसल्लम जो मुश्किलात**

समझ लिया जाए तो दूसरी आयत से वो टकराती हुई महसूस होती है पर हक़ीक़त ये है कि कुरआन की आयतें आपस में टकराती नही हैं । अगर मफ्हूम ग़लत लिया जाए तो ग़लत मफ्हूम समझने की वजह से इंसान ग़लतफेहमी का शिकार हो जाता है ।

कुरआन मजीद फुरक़ाने हमीद में सूरह तौबा की आयत नम्बर 129 में इर्शाद फरमाया गया
فَاِنۡ تَوَلَّوۡا **فَقُلۡ حَسۡبِیَ اللّٰهُ** ۟ۖ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ؕ عَلَیۡهِ تَوَكَّلۡتُ وَهُوَ رَبُّ الۡعَرۡشِ الۡعَظِیۡمِ
फ-क़ुल हस्बियल्लाह ○ तर्जुमा : फरमा दीजिए, "मेरे लिए **अल्लाह काफी है**" ।

अब अगर कोई इस आयत का ये मतलब ले कि **अल्लाह काफी है**, अल्लाह के सिवा दूसरे को **काफी** कहना शिर्क है तो कुरआन मजीद फुरक़ाने हमीद पर ऐतराज़ वाक़ेअ होता है । वो ऐसे कि सूरतुल अनफाल की आयत नम्बर 64 में अल्लाह तआला फरमाता है :

یٰۤاَیُّهَا النَّبِیُّ حَسۡبُكَ اللّٰهُ وَمَنِ اتَّبَعَكَ مِنَ الۡمُؤۡمِنِیۡنَ

तर्जुमा :- **" ऐ नबी आप के लिए अल्लाह भी काफी है और आपकी पैरवी करने वाले नेक, सालेह मोमिनीन भी काफी हैं "**

सवाल ये है कि जब अल्लाह काफी है तो किसी और की क्या हाजत ? क्या जरूरत ? इसका जवाब मुफस्सिरीन ने बड़ा प्यारा दिया । फरमाया कि जहाँ ये कहा जाएगा कि ,**"अल्लाह काफी है"** इस से मुराद है कि हक़ीक़ी तौर पर सब कुछ देने वाला अल्लाह ही है । और जहाँ ये कहा जाएगा कि मोमिनीन काफी हैं, तो उस से मुराद ये है कि वो (मोमिनीन) अल्लाह की अता से काफी हैं ।

इसी तरह ऐसी और भी मिसालें हैं । मिसाल के तौर पर बसा-अवकात ये जुम्ला कहा जाता है कि " अल्लाह तआला से सबकुछ होने का यक़ीन और ग़ैरुल्लाह से कुछ ना होने का यक़ीन होना चाहिए" । अल्लाह तआला से सबकुछ होने का यक़ीन रखो और अल्लाह के अलावा जो हैं, ग़ैरुल्लाह हैं , उन से कुछ ना होने का यक़ीन रखो ।

यक़ीनन बिना शक और शुबा तमाम काम बनाने वाली ज़ात तो अल्लाह ही की है । उसकी मशीअत के बग़ैर ज़र्रा भी हरकत नही कर सकता । लेकिन इस फ़ुफ्तगु से अगर ये कोशिश की जाए कि दो जहां के सरदार सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को बे-इख़्तियार साबित करने की कोशिश की हो और ये तसव्वुर देने की कोशिश हो कि हुज़ूर ना कुछ कर सकते हैं ना कुछ दे सकते हैं , अल्लाह की अता से भी नही दे सकते । अगर ये नज़रिया हो तो मआज़अल्लाह कुरआन की कई आयतों और अहादीसे तय्यबा का इंकार हो जाएगा । एक छोटी सी मिसाल पेश करता हूँ । बुखारी शरीफ, मुस्लिम शरीफ और दिगर अहादीस की किताबों में तफसील से मौजूद

है कि मैदाने मेहशर में लोग निजात के लिए अंबिया के पास जाऐंगे। अंबिया फरमाऐंगे, जाओ किसी और के पास और फिर जब वो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में आऐंगे तो हुज़ूर नबी ए करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अहले मेहशर की इस मुश्किल में मदद फरमाऐंगे और फरमाऐंगे कि " मै ही तुम्हारी शफाअत करूँगा।" अगर ये अक़ीदा रख लिया जाए कि अल्लाह की दी हुई ताकत से भी नबी ए करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम कुछ नही कर सकते तो ये अहादीस का भी इंकार है और कुरआन की भी कई आयतों का इंकार है।

ये कौम, खारजी, जिस ग़लतफेहमी का शिकार हुए, वो ग़लतफेहमी ये थी कि उन्होने ये तसव्वुर किया कि हज़रते अली और सहाबा मुश्रिक हैं। और हक़ीक़त ये है कि उन्होने शिर्क को समझा नही कि शिर्क किसे कहते हैं ? आईए हम पहले ये समझ लें कि शिर्क किसे कहते हैं ?

शिर्क की तीन किस्में होती हैं।

❶ शिर्क फिल इबादत ❷ शिर्क फिज़ ज़ात ❸ शिर्क फिस सिफात

❶ शिर्क फिल इबादत :- ये है कि अल्लाह तआला के अलावा किसी और को इबादत का लायक़ समझा जाए। जैसे मुश्रिकीने मक्का कि वो खाना-ए-काबा में 360 बुत, उन्होने रखे थे और उनकी पूजा करते थे। तो अल्लाह के सिवा किसी और की इबादत की जाए, पूजा की जाए तो ये शिर्क फिल-इबादत है।

"ला-इलाहा इल्लल्लाह" → अल्लाह के सिवा कोई इबादत के लायक नही।

❷ शिर्क फिज़-ज़ात :- ये है कि ये तसव्वुर किया जाए कि ख़ालिके कायनात, रब्बुल आलमीन की दो ज़ातें हैं। तो ऐसा तसव्वुर शिर्क फिज़-ज़ात है। अल्हम्दुलिल्लाह मुसलमान ना तो शिर्क फिल इबादत में मुब्तिला हैं और ना ही शिर्क फिज़ ज़ात में मुब्तिला हैं। न तो वो अल्लाह के अलावा किसी को खुदा समझता है, ईलाह समझता है, माअबूद समझता है, न तो वो किसी और की इबादत करता है। ना तो ईसाइयों की तरह , मुसलमान किसी और को खुदा समझते हैं, ना खुदा का बेटा समझते हैं।

❸ शिर्क फिस-सिफात :- तीसरी शिर्क की किस्म है शिर्क फिस सिफात। इसका समझना इंतिहाई ज़रूरी है। इसकी तारीफ ये बयान हुई कि जो अल्लाह तआला की सिफात हैं, उन के बराबर किसी और की सिफात तसव्वुर करना, ये शिर्क बिस्सिफात है।
इस की मुकम्मल तफ्सीर अभी अर्ज़ की जाती है। पहले शिर्क की मुज़म्मत आप समाअत कीजिए

अब देखें ! हज़रते आसफ बिन बर्ख़िया ,जो तख़्त लेकर आए, आप अल्लाह के वली हैं, ज़बूर के आलिम हैं, हज़रते सुलैमान अलैहिस्सलाम के उम्मती हैं। अल्लाह ने आपको ये ताक़त दी कि आपने रूहानी कुव्वतों से ये काम किया जो मुश्किल है, आपके लिए आसान था। हज़रते सुलैमान अलैहिस्सलाम की उम्मत में जो वली है, उसकी ताक़त का ये आलम है तो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की उम्मत के औलिया, अंबिया की ताक़तें और फिर अंबिया के जो सरदार हैं सय्यदे कौनैन सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उनकी ताक़त का क्या आलम होगा ? सहाबा-ए-किराम अलैहेमुर्रिदवान का यही अक़ीदा था और सहाबा-ए-किराम मुश्किल में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से मदद मांगा करते थे। हुज़ूर को वसीला समझते और सहाबा-ए-किराम का अक़ीदा यही था कि हक़ीक़ी मददगार सिर्फ और सिर्फ अल्लाह तआला है। हुज़ूर नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अल्लाह की दी हुई ताक़त से मदद फरमाते हैं।

हज़रते सय्यदुना अबूबक्र सिद्दीक रदियल्लाहु अन्हु के दौरे ख़िलाफत में नबुव्वत का झूठा दावा करने वाले मुसेलमा कज़्ज़ाब ने सर उठाया। उस बदबख़्त कज़्ज़ाब के साथ साठ हजार (60,000) फौजी थे। इस जंगे यमामा में मुसलमानों की तादाद बहुत कम थी। एक मोड़ वो आया कि मुसलमान सख़्त मुश्किल में मुब्तिला हुए। इस परेशानी में मुसलमानों के सिपाहसालार जलीलुल कद्र सहाबी-ए-रसूल हज़रते ख़ालिद-बिन-वलीद रदियल्लाहु अन्हु ने हुज़ूर नबी-ए-करीम सल्ललाहु अलैहि वसल्लम को मदद के लिए पुकारा। इब्ने कसीर जिन्हें दुनिया मोहक़्क़िक़ तस्लीम करती है, " अल-बिदाया वन-निहाया , जिल्द-6 सफ्ह नम्बर 24" वो लिखते हैं-**" क़ाना शिआरुहुम यवमएज़िन या मुहम्मदा "**
"उस वक़्त इन सहाबा-ए-किराम का शिआर ये थी कि हुज़ूर को मदद के लिए पुकार रहे थे।"

आप मुझे बताइए , सोचें, सहाबा-ए-किराम से बढ़कर तौहीद को समझने वाला और कौन हो सकता है ? अगर किसी को मदद के लिए पुकारना शिर्क होता तो सहाबा-ए-किराम हर्गिज़ हुज़ूर को ना पुकारते। हाँ इतना अर्ज़ कर दूँ कि जब हम किसी से मदद मांगते हैं तब ये अक़ीदा होना ज़रूरी है कि उन्हें जो ताक़तें हैं वो अल्लाह की अता से हैं और वो बि-इज़्निल्लाह, अल्लाह की दी हुई ताक़त से, अल्लाह के इज़्न से, अल्लाह के हुक्म से , अल्लाह की दी हुई इज़ाज़त से मदद करते हैं। सहाबा-ए-किराम का ये अमल है और नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हमें सहाबा-ए-किराम के नक़्शे-कदम पर चलने का हुक़्म दिया है।

तिर्मिज़ी शरीफ किताबुल ईमान में है आक़ा ए दो जहां सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इर्शाद फरमाया ,**" बनी इसराईल 72 फिरकों में तकसीम हो गई और मेरी उम्मत में 73 फिरके होंगे। तमाम फिरके जहन्नम में जाऐंगे मगर एक (1) ही जन्नती होगा। सहाबा-ए-किराम ने अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ! हमें बताइए कि वो जन्नती फिरका**

कान बन जाता हूँ, मै उसकी आँखें बन जाता हूँ। हज़रते इमाम जलालुद्दीन सुयूती अश्शाफई अलैहिर्रहमा और दिगर बुज़ुर्गों ने भी इसकी तशरीह में ऐसी बातें लिखी हैं। लेकिन इमाम फख़रुद्दीन राज़ी अलैहिर्रहमा ने बड़े वाज़ेह तौर पर इर्शाद फरमाया कि **जब अल्लाह के जलाल का नूर उस के कान बन जाता है तो वह बंदा क़रीब की बातें भी सुन लेता है और दूर की बातें भी सुन लेता है और जब अल्लाहके जलाल का नूर उसकी आँखें बन जाता है तो वो बंदा क़रीब को भी देख लेता है और दूर को भी देख लेता है और जब अल्लाह के जलाल का नूर उसके हाथ बन जाता है तो अल्लाह तआला उसे वो ताक़तें देता है कि क़रीब और दूर, आसान व मुश्किल तमाम कामों पर कुदरत रखता है और वो वो करामतें दिखाता है कि अक्लें दंग रह जाती हैं।"**

मोहतरम व प्यारे भाइयों ! अल्लाह के नेक बंदे जो ताक़त रखते हैं ,हदीसे कुदसी और तफ्सीरे क़बीर के हवाले से आप ने अच्छी तरह समझ लिया। कुरआन मजीद फ़ुरक़ाने हमीद में भी अल्लाह के नेक बंदों की ताक़त का ज़िक्र है। **मलिका ए बिल्कीस, मुल्के सबा की मलिका। उसका वो तख़्त 80 गज लंबा, 40 गज चौड़ा सोने चाँदी और हीरे जवाहिरात से सजा हुआ दो महीने की मुसाफत पर था। दो महीने तक घोड़ा दौड़ता रहे तब जाकर इसके फासले को तय करे। सख़्त पहरे में , 7 कमरों के 7 तालों में बंद था। इस पर पहरेदार मुक़र्रर किये गए थे। हज़रते सुलैमान अलैहिस्सलाम ने अपने दरबारियों से फरमाया कि मलिका-ए-बिल्कीस मेरे पास आ रही हैं। उसके आने से पहले तुम में से कोई है जो मलिका-ए-बिल्कीस के आने से पहले तख़्त को मेरे पास ले आए ? कुरआन मजीद फ़ुरक़ाने हमीद बयान फरमाता है कि एक ताक़तवर जिन्न ने कहा कि, " मै लेकर आऊंगा।" हज़रते सुलैमान अलैहिस्सलाम ने फरमाया कब लेकर आओगे ? जिन्न कहने लगा अभी सुबह है, शाम होने से पहले-पहले ले आऊंगा। आप (सुलैमान अलैहिस्सलाम) ने फरमाया ये तो ताख़ीर (देर) हो जाएगी। मुझे तो इस से भी पहले चाहिए। सूरह नम्ल आयत नम्बर 40 में फरमाया गया**

قَالَ الَّذِیْ عِنْدَهٗ عِلْمٌ مِّنَ الْكِتٰبِ اَنَا اٰتِیْکَ بِهٖ قَبْلَ اَنْ یَّرْتَدَّ اِلَیْکَ طَرْفُکَ ؕ فَلَمَّا رَاٰهُ مُسْتَقِرًّا عِنْدَهٗ قَالَ هٰذَا مِنْ فَضْلِ رَبِّیْ ۟ۖ لِیَبْلُوَنِیْٓ ءَ اَشْكُرُ اَمْ اَكْفُرُ ؕ وَمَنْ شَكَرَ فَاِنَّمَا یَشْكُرُ لِنَفْسِهٖ ۚ وَمَنْ كَفَرَ فَاِنَّ رَبِّیْ غَنِیٌّ كَرِیْمٌ

हज़रते आसफ बिन बर्ख़िया का ज़िक्र किया जो वली-ए-कामिल थे। सुलैमान अलैहिस्सलाम के उम्मती थे। **"कहा उस वली ने जिस के पास ज़बूर का इल्म था, अल्लाह कि किताब का इल्म था।, मै उस तख़्त को ले कर आऊंगा। हज़रते सुलैमान अलैह्स्सलाम ने उनसे फरमाया आप कब लेकर आऐंगे ? तो आप (आसफ बिन बर्ख़िया) फरमाने लगे, ' आपकी पलक झपकने से पहले ले कर आ सकता हूँ। तो आप (सुलैमान अलैहिस्सलाम) ने फरमाया ले आओ। हज़रते आसफ बिन बर्ख़िया ने फौरन ही तख़्त सामने मौजूद कर दिया।"**

➤सूरह लुकमान आयत नंबर 13 में इर्शाद फरमाया गया

: اِنَّ الشِّرْکَ لَظُلْمٌ عَظِیْمٌ तर्जुमा :- बेशक शिर्क बड़ा ज़ुल्म है।

➤सूरतुन्निसा आयत नंबर 48 और 116 में फरमाया गया

اِنَّ اللّٰهَ لَا یَغْفِرُ اَنْ یُّشْرَکَ بِهٖ وَیَغْفِرُ مَا دُوْنَ ذٰلِکَ لِمَنْ یَّشَآءُ ۚ وَمَنْ یُّشْرِكْ بِاللّٰهِ فَقَدِ افْتَرٰۤی اِثْمًا عَظِیْمًا (सूरतुन्निसा आयत नंबर 48)

तर्जुमा :- "बेशक जिसने शिर्क किया उसने बड़े गुनाह का तुफान बांधा।"

اِنَّ اللّٰهَ لَا یَغْفِرُ اَنْ یُّشْرَکَ بِهٖ وَیَغْفِرُ مَا دُوْنَ ذٰلِکَ لِمَنْ یَّشَآءُ ؕ وَمَنْ یُّشْرِكْ بِاللّٰهِ فَقَدْ ضَلَّ ضَلٰلًاۢ بَعِیْدًا (सूरतुन्निसा आयत नंबर 48)

तर्जुमा: "बेशक जो अल्लाह के साथ शिर्क करेगा,अल्लाह तआला उसकी बख़्शिश नही फरमाएगा और शिर्क और कुफ्र के अलावा जो और गुनाह होंगे चाहेगा तो माफ फरमा देगा।"

बिला शुबा मुश्रिक ज़ुल्मे अज़ीम का मुर्तकिब, मग़फिरत और बख़्शिश से महरूम, सरीह गुमराह, हमेशा जहन्नम में सड़ने वाला, बदबख़्त, नामुराद और यक़ीनन इस्लाम के दायरे से खारिज है। मुश्रिक की मुज़म्मत अपनी जगह है लेकिन किसी मुसलमान पर शिर्क का इल्ज़ाम लगाना, जब कि वो मुश्रिक नही मुसलमान है, शिर्क से पाक है, मुसलमान पर शिर्क का इल्ज़ाम लगाना इतना बड़ा गुनाह है कि यूँ समझिये कि शिर्क का इल्ज़ाम लगाने वाला खुद दायरा-ए-इस्लाम से बाहर होने के, उसके,इम्कानात हैं।

तफ्सीर इब्ने कसीर में हदीसे पाक है जिसका खुलासा ये है कि नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया :

"एक शख़्स कुरआन पढ़ता होगा, कुरआन का नूर उसके चेहरे पर होगा, इस्लाम पर अमल करने वाला होगा मगर वो कुरआन के नूर से भी महरूम हो जाएगा और इस्लाम से भी दूर हो जाएगा।"

सहाबा-ए-किराम ने पूछा या रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ऐसा क्यों होगा ? आप ने फरमाया कि ये अपने पड़ोसी मुसलमान पर शिर्क का इल्ज़ाम लगाएगा। सहाबा-ए-किराम ने पूछा कि मुश्रिक कौन होगा ? आपने फरमाया कि ये इल्ज़ाम लगाने वाला खुद दायरा-ए-इस्लाम से खारिज होगा। क्यों कि मुसलमान पर (जो कि शिर्क से बरी है), शिर्क का इल्ज़ाम लगाना, गोया कि अपने आप को इस्लाम से दूर करना है।

तो शिर्क फिज़-ज़ात, शिर्क-फिल इबादत, इनको समझना तो आसान है लेकिन शिर्क

फिरिस्सफात को ना समझने की वजह से कई लोग दीने इस्लाम से गुमराह हो गए। आज हम शिर्क फिरिस्सफात को समझते हैं। शिर्क फिरिस्सफात के माअना फिर अर्ज़ करता हूँ। अल्लाह और बंदे की सिफात में बराबरी का तसव्वुर।

➢ कुरआन मजीद फुरक़ाने हमीद की सूरह बक़रह की आयत नंबर 143 में है

اِنَّ اللّٰہَ بِالنَّاسِ لَرَءُوۡفٌ رَّحِیۡمٌ

तर्जुमा : " बेशक अल्लाह तआला लोगों पर रऊफो रहीम है।"

अल्लाह रऊफ भी है और रहीम भी है।

➢ कुरआन मजीद फुरक़ाने हमीद में दूसरे मुक़ाम पर फरमाया जो कि सूरह तौबा की आयत नंबर 128 है:

لَقَدۡ جَآءَکُمۡ رَسُوۡلٌ مِّنۡ اَنۡفُسِکُمۡ عَزِیۡزٌ عَلَیۡہِ مَا عَنِتُّمۡ حَرِیۡصٌ عَلَیۡکُمۡ بِالۡمُؤۡمِنِیۡنَ رَءُوۡفٌ رَّحِیۡمٌ

तर्जुमा :- "बेशक तुम्हारे पास तुम्ही में से वो रसूल तशरीफ लाए जिन पर तुम्हारा मुशक्कत में पड़ना भारी है, तुम्हारी भलाई को बहुत चाहने वाले हैं , मोमिनों पर रऊफ और रहीम हैं।"

एक तरफ फरमाया जा रहा है कि अल्लाह तआला रऊफो-रहीम है और दूसरी तरफ फरमाया जा रहा है कि रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम रऊफो-रहीम हैं। तो ज़हन में ये सवाल पैदा होता है कि अभी तो आपने कहा कि शिर्क फिरिस्सफात नाम है सिफात में बराबरी का तो ये सिफात तो एक जैसी हो गईं और ये दोनों कुरआन शरीफ की आयते हैं और कुरआन तो शिर्क से दूर करता है, दिलों को शिर्क से पाक करता है। तो इसका मुफस्सिरीन ने बहुत ही प्यारा नुक़्ता इर्शाद फरमाया। फरमाया रऊफो रहीम अल्लाह भी है , हुज़ूर भी हैं लेकिन बराबरी नही है। अल्लाह तआला का रऊफो रहीम होना ज़ाती है , हुज़ूर का रऊफो रहीम होना अल्लाह की अता से है। अल्लाह तआला हमेशा हमेशा से रऊफो रहीम है और हुज़ूर रऊफो रहीम हैं जब से अल्लाह तआला ने आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को ये मुक़ाम व मर्तबा दिया। जब ये फर्क़ हो गया तो बराबरी ना रही। अब जब बराबरी ना रही तो शिर्क लाज़िम ना आया।

दूसरी मिसाल समाअत कीजिए:-➢ सूरह नम्ल की आयत नंबर 65 में फरमाया गया:

قُلۡ لَّا یَعۡلَمُ مَنۡ فِی السَّمٰوٰتِ وَ الۡاَرۡضِ الۡغَیۡبَ اِلَّا اللّٰہُ ؕ وَ مَا یَشۡعُرُوۡنَ اَیَّانَ یُبۡعَثُوۡنَ

तर्जुमा: "तुम फरमा दो, जो कोई आसमान और ज़मीन में है, अल्लाह के सिवा कोई गैब नही जानता।"

एक तरफ ये फरमाया गया कि अल्लाह ही ग़ैब जानता है। दूसरी तरफ सूरह जिन्न की आयत नंबर 26 में फरमाया गया

عٰلِمُ الۡغَیۡبِ فَلَا یُظۡہِرُ عَلٰی غَیۡبِہٖۤ اَحَدًا ﴿ۙ۲۶﴾ اِلَّا مَنِ ارۡتَضٰی مِنۡ رَّسُوۡلٍ فَاِنَّہٗ یَسۡلُکُ مِنۡۢ بَیۡنِ یَدَیۡہِ وَ مِنۡ : خَلۡفِہٖ رَصَدًا

समुंदर में मछलियों से आप गुफ्तगु फरमाते। ये जो आप को मुक़ाम व मर्तबा दिया गया , पूरी दुनिया की हुकूमत दी गई, आप हवाओं में उड़ते, हवा आप के ताबेअ थी। ये मुक़ाम व मर्तबा किसने दिया ? अल्लाह ने दिया। तो अल्लाह अपने नेक बंदों को जो भी मर्तबा दे बंदों को (हमें) चाहिए कि वो अल्लाह की कुदरत पर यक़ी रखें और वो ये कहें कि अल्लाह तआला जो चाहे कर सकता है।

बुख़ारी शरीफ दूसरी जिल्द सफ्ह नम्बर 963 पर हदीस मौजूद है। **तर्जुमा :- हज़रते अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु से मरवी है कि आप सल्लल्लाहुअलैहि वसल्लम ने इर्शाद फरमाया, " बेशक अल्लाह तआला फरमाता है - जो मेरे वली से दुश्मनी रखेगा, जो मेरे मेहबूब बंदें से दुश्मनी रखेगा उसके लिए मेरा ऐलाने जंग है।"** मेहबूब बंदें से दुश्मनी के क्या माअना हैं ? इसके माअना हैं मेहबूब बंदे के मुक़ाम व मर्तबे को घटाने की कोशिश करना, अल्लाह तआला ने उन्हें जो मुक़ाम व मर्तबा दिया उसे तस्लीम ना करना, उनकी इज़्ज़तो-ताज़ीम और तौक़ीर मुसलमानों के दिलों से निकालने की कोशिश करना, ये सब चीज़ें वली से दुश्मनी के ज़ुमरे में शुमार होती हैं। और फरमाया - जो अल्लाह के वली से, मेहबूब बंदें से दुश्मनी रखता है , अल्लाह तआला उससे ऐलाने जंग फरमाता है। इसके तहत मोहद्दिसीन ने ये फरमाया कि अल्लाह तआला उसे मरते वक़्त ईमान से महरूम फरमा देता है जो अल्लाह के वली से दुश्मनी रखे, उनके मुक़ाम व मर्तबा को घटाने की कोशिश करे।

हदीस:- "मेरा बन्दा कुर्ब हासिल करता रहता है यहाँ तक कि वो फराइज़ के ज़रिए मेरी बारग़ाह में कुर्ब हासिल करता है और मेरा बंदा नवाफ़िल के ज़रिए (फराइज़ के बाद) मेरा कुर्ब हासिल करता है यहाँ तक कि मै उसे अपना मेहबूब बना लेता हूँ तो मै उसके कान बन जाता हूँ जिससे वो सुनता है, मै उसकी आँख बन जाता हूँ जिससे वो देखता है और मै उसके हाथ बन जाता हूँ जिससे वो पकड़ता है और मै उसके पाँव बन जाता हूँ जिससे वो चलता है और अगर मेरा ये मक़बूल बंदा मुझसे कोई सवाल करे, दुआ माँगे ज़रूर-बज़रूर उसकी दुआओं को क़ुबूल फरमाता हूँ। "

मुफस्सिरे क़बीर अल्लामा इमाम फख़रुद्दीन राज़ी अलैहिर्रहमा, जिन का अभी ज़िक्र किया गया कि आप का सने विसाल 606 हिजरी है, तफ्सीरे क़बीर जिल्द 7, सफ्ह नम्बर 436 सूरह क़हफ की आयते करीमा नम्बर 9 है

اَمۡ حَسِبۡتَ اَنَّ اَصۡحٰبَ الۡکَہۡفِ وَ الرَّقِیۡمِ ۙ کَانُوۡا مِنۡ اٰیٰتِنَا عَجَبًا -

इसके तहत मुफस्सिरे शहीद, मुफस्सिरे क़बीर इस हदीसे कुदसी की शरह फरमाते है।

शरह :- जब अल्लाह का नेक बंदा मुसलसल इबादतें करता रहता है और अल्लाह का मक़बूल बन जाता है , फिर वो इस मुक़ाम पर पहुँच जाता है कि अल्लाह तआला फरमाता है ," मै उसके

फरमाबरदारी की ।"

तो मुनाफिक़ बोले,ये मर्द (हुज़ूर के बारे में कह रहे हैं) कि ये नबी (नाऊज़ोबिल्लाहि मिन ज़ालिक़) शिर्क के करीब हो गए हैं। हमें तो मना करते हैं कि अल्लाह के सिवा किसी की पूजा मत करो और ये चाहते हैं कि हम इन्हें खुदा मान लें, जैसा कि ईसाइयों ने हज़रते ईसा अलैहिस्सलाम को खुदा तसव्वुर कर लिया। तो अल्लाह तआला ने इस आयते करीमा को नाज़िल किया। सूरह निसा आयत नंबर 80 : مَنْ يُّطِعِ الرَّسُوْلَ فَقَدْ اَطَاعَ اللّٰهَ ۚ وَمَنْ تَوَلّٰى فَمَاۤ اَرْسَلْنٰكَ عَلَيْهِمْ حَفِيْظًا

तर्जुमा :" जो रसूलुल्लाह सल्ललाहु अलैहि वसल्लम की इताअत करे उसने दर-हक़ीक़त अल्लाह की इताअत की। "

यहाँ पर एक चीज़ तवज्जो के लायक है वो ये कि हुज़ूर ने फरमाया " मेरी मुहब्बत अल्लाह की मुहब्बत है " , "मेरी इताअत अल्लाह की इताअत है" तो मुनाफिक़ीन ने हुज़ूर पर शिर्क का इल्ज़ाम इस वजह से लगाया कि वो ये कहने लगे कि "हुज़ूर ने अपनी ज़ात को अल्लाह से मिला दिया "। अल्लाह अल्लाह है और ये (हमारे नबी) अल्लाह के बंदे हैं। ये कैसे हो सकता है कि इनकी मुहब्बत अल्लाह की मुहब्बत बन जाए , इन की इताअत अल्लाह की इताअत बन जाए ?

कुरआन मजीद ने इन मुनाफिक़ों का रद किया और फरमाया कि मेहबूब की जो इताअत करता है, जो हुज़ूर से मुहब्बत करता है वो दर-हक़ीकत अल्लाह से मुहब्बत कर रहा है। हुज़ूर की इताअत दर-हक़ीक़त अल्लाह की इताअत है। सूरह निसा आयत नंबर 80 में अल्लाह तआला का इर्शाद मौजूद है :

مَنْ يُّطِعِ الرَّسُوْلَ فَقَدْ اَطَاعَ اللّٰهَ

कुरआन :- " जिसने रसूलुल्लाह की इताअत की उसने अल्लाह की इताअत की।"

यही तफ्सीर, यही वाक़िआ अज़ीमुश्शान तफ्सीर तफ्सीरे ख़ाज़िन पहली जिल्द सफ्ह नंबर 405 पर मौजूद है। और भी कई मुफस्सिरीन ने इस वाक़िए को ज़िक्र किया है।

यहाँ पर ये अर्ज़ करूँ कि अल्लाह तबारक़ व तआला अपने नेक बंदों को मुक़ाम व मर्तबा की बुलंदी देता है और इन नेक बंदों को ताकत व कुदरत देता है। इसका ये मतलब है जैसा कि अल्लाह तआला सूरह बक़रह की आयत नंबर 148 में इर्शाद फरमाता है :-

اِنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَىْءٍ قَدِيْرٌ

तर्जुमा :-**" बेशक अल्लाह हर चीज़ पर क़ादिर है।"**

वो जिसे जो मुक़ाम व मर्तबा देना चाहे दे सकता है। अल्लाह की कुदरत को महदूद ना समझा जाए। रब्बुल आलमीन ने हज़रते सुलैमान अलैहिस्सलाम को कैसी हुकूमत दी ! जिन्नात आप के ताबेअ (अधीन), हवाएं आप के ताबेअ, परिंदों की बोलियाँ आप सुनते और

तर्जुमा :- " ग़ैब का जानने वाला रब्बुल आलमीन ग़ैब का इल्म किसी को नही देता मगर अपने रसूलों को पसंद फरमाता है और उन्हें ग़ैब का इल्म अता फरमाता है। "

दोनों आयतें कुरआन की हैं। इन दोनों आयतों का मतलब मुफस्सिरीन ने ये बयान किया कि हक़ीक़ी तौर पर ग़ैब का इल्म जानने वाला सिर्फ और सिर्फ अल्लाह है। अल्लाह की अता के बग़ैर कोई कुछ नही जानता और जब अल्लाह तआला अता फरमाए तो मेहबूबे करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अल्लाह की अता से इल्मे गैब जानते हैं। अल्लाह भी ग़ैब के इल्म को जानता है और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम भी ग़ैब के इल्म को जानते हैं लेकिन बराबरी नही है। अल्लाह तआला का इल्म ज़ाती है, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इल्म अल्लाह की अता से है। जब फर्क हो गया तो बराबरी ना हुई।

कुरआन मजीद फुरक़ाने हमीद में इस की एक और भी मिसाल दी जा सकती है। सूरह मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की आयत नंबर 11 में अल्लाह तआला इर्शाद फरमाता है :

ذٰلِكَ بِاَنَّ اللّٰهَ مَوْلَى الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَ اَنَّ الْكٰفِرِيْنَ لَا مَوْلٰى لَهُمْ

तर्जुमे का खुलासा: "मुसलमानों का मौला/ मददगार अल्लाह है।"

सूरह तहरीम आयत नंबर 4 में इर्शाद फरमाया :

فَاِنَّ اللّٰهَ هُوَ مَوْلٰىهُ وَ جِبْرِيْلُ وَ صَالِحُ الْمُؤْمِنِيْنَ

तर्जुमा : "पस बेशक अल्लाह उनका मौला / मददगार है और जिब्रईल (अलैहिस्सलाम) मौला / मददगार हैं और सालेह मोमिनीन मददगार हैं।"

सवाल ये है कि एक तरफ कहा जा रहा है कि अल्लाह मददगार है / मौला है। दूसरी तरफ कहा जा रहा है कि अल्लाह भी मददगार है, जिब्रईल (अलैहिस्सलाम) भी मददगार हैं और नेक मोमिनीन भी मददगार हैं। दोनों आयतें कुरआन की हैं, कोई टकराओ नही। समझना ये है कि अल्लाह तआला मौला है/ मददगार है हक़ीक़ी तौर पर / ज़ाती तौर पर और जिब्रईल (अलैहिस्सलाम) और सालेह मोमिनीन मददगार हैं अल्लाह की अता से। अल्लाह ने अपनी मदद का उन्हें ज़रीआ और वसीला बनाया।

कुरआन मजीद फुरक़ाने हमीद की एक और आयते करीमा इस मफ्हूम को मज़ीद वाज़ेह करती है। सूरह माईदा की आयत नम्बर 55 में अल्लाह पाक इर्शाद है :

اِنَّمَا وَلِيُّكُمُ اللّٰهُ وَ رَسُوْلُهٗ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوا الَّذِيْنَ يُقِيْمُوْنَ الصَّلٰوةَ وَيُؤْتُوْنَ الزَّكٰوةَ وَهُمْ رٰكِعُوْنَ

खुलासा ए तर्जुमा :" अल्लाह तुम्हारा मददगार है, और उस के रसूल तुम्हारे मददगार हैं और ईमान वाले तुम्हारे मददगार हैं।"

अल्लाह भी मददगार, हुज़ूर भी मददगार, सालेह मोमिनीन भी मददगार हैं।

वही फर्क़ है → अल्लाह ज़ाती तौर पर मददगार है, हक़ीक़ी मददगार है और रसुलुल्लाह की मदद , नेक मोमिनों की मदद अल्लाह की अता से है और अल्लाह की इनायत से है और अल्लाह के करम से है। हक़ीक़ी मददगार सिर्फ अल्लाह है। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और नेक मोमिनीन अल्लाह की मदद के हासिल करने का ज़रीआ और वसीला हैं।

यहाँ पर एक सवाल और पैदा होता है कि जब ये कह दिया गया कि "अल्लाह तुम्हारा मददगार है" और इसी तरह पिछली आयत में ये कह दिया गया कि "अल्लाह ही उनका मौला है" तो जब अल्लाह के मददगार होने का ज़िक्र कर दिया गया तो फिर मोमिनीन, रसूलुल्लाह की मदद, जिब्रईल की मदद का ज़िक्र क्यों किया गया ? क्या अल्लाह तआला की मदद काफी नही है ? हर्गिज़ ये बात नही है। असल बात ये है कि क़ुरआन ये अक़ीदा बयान कर रहा है कि अल्लाह तआला हि मदद फरमाएगा लेकिन अल्लाह तआला अपने नेक बंदों को मुक़ाम व मर्तबे व बुलंदी अता फरमाता है और उन से वाबस्ता रहेंगे और उनकी बारग़ाह में हाज़िर होंगे तो अल्लाह तआला करम फरमाएगा और उन के वसीले से हमारा बेड़ा पार फरमा देगा।

क़ुरआन मजीद फ़ुरक़ाने हमीद की आयतें पेश हो रही हैं और इन आयात का बताने का मक़सद क्या है कि एक आयत से गलत मफ्हूम ले लिया जाए तो क़ुरआन की दूसरी आयत उससे टकरा जाएगी। हालांकि क़ुरआन में कोई टकराव नही है।
सूरह शूरा आयत नंबर 49 : يَهَبُ لِمَنْ يَّشَآءُ اِنَاثًا وَّ يَهَبُ لِمَنْ يَّشَآءُ الذُّكُوْرَ
तर्जुमा : " अल्लाह जिसे चाहे बेटियाँ अता फरमाए और जिसे चाहे बेटे दे।"

और दूसरे मुक़ाम पर सूरह मरियम आयत नंबर 19 , हज़रते जिब्रईल ए अमीन हज़रते मरियम के पास आए और बोले : قَالَ اِنَّمَآ اَنَا رَسُوْلُ رَبِّكِ ۖ لِاَهَبَ لَكِ غُلٰمًا زَكِيًّا
तर्जुमा :" मै तो सिर्फ तेरे रब का भेजा हुआ कासिद हूँ कि तुझे सुथरा और पाकीज़ा बेटा अता करूँ

एक तरफ फरमाया गया कि बेटे और बेटियाँ अल्लाह देता है। दूसरी तरफ हज़रते जिब्रईल ए अमीन कहा रहे हैं कि "मै तुझे नेक सालेह बेटा अता करूँ"। हक़ीक़ी तौर पर अता करने वाला अल्लाह ही है। जिब्रईल ए अमीन जो अता कर रहे हैं , अल्लाह की अता से, बी-इज़्निल्लाह कर रहे हैं।

सूरह ज़ुमर आयत नंबर 42 में इर्शाद फरमाया गया :
اَللّٰهُ يَتَوَفَّى الْاَنْفُسَ حِيْنَ مَوْتِهَا وَ الَّتِيْ لَمْ تَمُتْ فِيْ مَنَامِهَا ۚ فَيُمْسِكُ الَّتِيْ قَضٰى عَلَيْهَا الْمَوْتَ وَ يُرْسِلُ الْاُخْرٰى اِلٰى اَجَلٍ مُّسَمًّى ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يَّتَفَكَّرُوْنَ
खुलासा ए तर्जुमा : अल्लाह ही जानों को मौत देता है ,रूह कब्ज़ करता है, ज़िंदगी मौत देने वाला

अल्लाह ही है।
सूरतुस्सज्दा आयत नंबर 11 में फरमाया गया :
قُلْ يَتَوَفّٰىكُمْ مَّلَكُ الْمَوْتِ الَّذِيْ وُكِّلَ بِكُمْ ثُمَّ اِلٰى رَبِّكُمْ تُرْجَعُوْنَ
तर्जुमा: "ऐ मेहबूब आप फरमाइए, " मौत के फरिश्ते हज़रते मलिकुल मौत तुम्हें मौत देंगे।"

सवाल ये है कि हज़रते इज़राईल अलैहिस्सलाम मौत दे रहे हैं। क़ुरआन बयान कर रहा है कि मौत वो देंगे और एक तरफ ये है कि मौत देने वाला अल्लाह तआला है। दोनों आयतों में कोई टकराव नही। समझना ये है कि हक़ीक़ी तौर पर मौत देने वाला अल्लाह ही है। हज़रते मलिकुल मौत अलैहिस्सलाम अल्लाह की अता से, बि-इज़्निल्लाह ये काम करते हैं।

मजीद क़ुरआन की इस आयत से बि-इज़्निल्लाह का मफ्हूम समझ में आता है। बताइए बिमारों को शिफा देने वाला कौन है ? अल्लाह है। मुर्दों को ज़िंदा कौन करता है ? अल्लाह करता है। लेकिन हज़रते ईसा अलैहिस्सलाम ऐलान फरमा रहे हैं सूरह आले-इमरान आयत नंबर 49:
وَرَسُوْلًا اِلٰى بَنِيْۤ اِسْرَآءِيْلَ ۙ۬ اَنِّيْ قَدْ جِئْتُكُمْ بِاٰيَةٍ مِّنْ رَّبِّكُمْ ۙ اَنِّيْۤ اَخْلُقُ لَكُمْ مِّنَ الطِّيْنِ كَهَيْـَٔةِ الطَّيْرِ فَاَنْفُخُ فِيْهِ فَيَكُوْنُ طَيْرًۢا بِاِذْنِ اللّٰهِ ۚ وَاُبْرِئُ الْاَكْمَهَ وَالْاَبْرَصَ وَاُحْيِ الْمَوْتٰى بِاِذْنِ اللّٰهِ ۚ وَاُنَبِّئُكُمْ بِمَا تَاْكُلُوْنَ وَمَا تَدَّخِرُوْنَ ۙ فِيْ بُيُوْتِكُمْ ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ
तर्जुमा : "मै बिमारों को शिफा देता हूँ, मादर ज़ात अंधों को आँखें देता हूँ, बर्स के मरीज़ों को शिफा देता हूँ और मै मुर्दों को ज़िंदा करता हूँ।"
लेकिन आप खुद वज़ाहत कर रहे हैं → बि-इज़्निल्लाह करता मै हूँ लेकिन ये अल्लाह की अता से करता हूँ। अल्लाह के इज़्न से करता हूँ। तो जब अताई और ज़ाती का फर्क़ हो गया तो बराबरी ना हुई और बराबरी ना हुई तो शिर्क ना हुआ।

नबी ए करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के दौर में मुनाफिक़ थे। मुनाफिक़ीन भी इन चीज़ों को ना समझ सके और उन्होने इतनी बड़ी जसारत की कि इस फर्क़ को ना समझने की वजह से उन्होने नबी ए करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर शिर्क का इल्ज़ाम लगा दिया। मुफस्सिरे शहीद हज़रते अल्लामा फख़रुद्दीन राज़ी अलैहिर्रहमा, जिनका सने विसाल 606 हिजरी है , आलमे इस्लाम की मशहूर-तरीन तफ्सीर तफ्सीरे कबीर में आप लिखते हैं- जिल्द 4, सफ्हा नंबर 150, बैरूत के नुस्ख़े में ये हवाला मौजूद है और ये आलमे इस्लाम की वो तफ्सीर है जो 800 सालों से तमाम मुसलमान व उलमा में मारूफ है।
हदीस : " नबी ए करीम सल्लल्लाहुअलैहि वसल्लम ने इर्शाद फरमाया, "जिसने मुझ से मुहब्बत की उस ने अल्लाह से मुहब्बत की, जिसने मेरी फरमाबरदारी की उसने अल्लाह की